thearyasamaj.org

ओ३म्

ओ३म्

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्

आर्य्य मार्तण्ड

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र – पाक्षिक

वैदिक संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध–आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, राजा पार्क, जयपुर

वर्ष : 89 अंक : 8
माद्य शुक्ल प्रतिपदा
विक्रम संवत् 2071
कलि संवत् 5115
21 जन. से 5 फर., 2015
दयानन्दाब्द : 190
सृष्टि संवत् : 01,96,08,53,115
मुख्य सम्पादक :
डॉ. सुधीर शर्मा – 9314032161
संपादक मंडल :
स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, सीकर
श्री ओम मुनि, ब्यावर
श्री विजयसिंह भाटी , जोधपुर
आर्य शिरोमणि पं. विनोदी लाल दीक्षित
श्री हरिपाल शास्त्री , अलवर
श्री जगदीश आर्य, जखराणा, अलवर
श्री ओमप्रकाश विद्यावाचस्पति, जयपुर
श्री अर्जुनदेव चड्डा , कोटा
श्रीमती अरूणा सतीजा , जयपुर
श्री सत्यपाल आर्य, अलवर
श्री बृजेन्द्र देव आर्य , अलवर
श्री अनिल आर्य, जयपुर
प्रकाशक :
आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजापार्क, जयपुर ।
दूरभाष : 0141 – 2621879
प्रकाशन : दिनांक 5 व 21
पत्र व्यवहार का अस्थाई पता :
डॉ. सुधीर शर्मा
सम्पादक, आर्य मार्तण्ड,
42, मुक्तानन्द नगर, गोपालपुरा बाईपास ,
जयपुर ।
मोबाईल – 9314032161
मुद्रक :
राज प्रिन्टर्स एण्ड एसोशिएट्स , जयपुर
ग्राफिक्स : प्रिण्टपैक, जयपुर ।
ई–मेल : aryamartand@gmail.com
एक प्रति मूल्य : 5 रुपया
सहायता शुल्क : 100 रुपया
ऑनलाईन प्राप्ति :
www.thearyasamaj.org/aryamartand

65वें गणतन्त्र दिवस की आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान की ओर से समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

यह अंक सार्वदेशिक आर्य वीर दल, राजस्थान प्रान्त के सौजन्य से प्रकाशित किया जा रहा है।

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस
(23 जन., 1897 - 18 अग., 1945)

ओ३म्

सार्वदेशिक आर्य वीर दल
स्थापना : 26 जन. 1929

पंजाब केसरी लाला लाजपतराय
(28 जन. 1865 - 17 नव., 1928)

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम् । – हे ईश्वर! हमारे राष्ट्र के समस्त ब्राह्मण ब्रह्मतेज से सम्पन्न होवें। – यजुर्वेद

thearyasamaj.org

वेदामृत राजा का कर्त्तव्य

ओ३म् वि जानी ह्यार्यान्ये च दस्यवो बर्हिष्मते रन्धया शासदव्रतान्।
शाकी भव यजमानस्य चोदिता विश्वेत्ता ते सधमाधेषु चाकन ।।
– ऋ. 1.51.8

भावार्थ :

राष्ट्र में राजा का भी यह कर्त्तव्य होता है कि वह दस्युओं का नाश और आर्यों का रक्षण करे। वस्तुतः राजा प्रभु का प्रतिनिधि ही होना चाहिए । राजा के द्वारा प्रभु प्रजा का कल्याण करते है । इसलिए राजा के लिए कहा भी गया है कि राजा तो नररूप में महादेव ही हैं । उस राजा के लिए प्रभु कहते हैं कि हे राजन् ! तू अपने राष्ट्र के आर्य पुरुषों को जान । 'ऋ गतौ' से बना आर्य शब्द यह संकेत करता है कि वह अपने कर्म में सदा लगा रहे । 2. हे राजन् ! तू उन पुरुषों को भी जान जो दस्यु हैं – जो निर्माणात्मक कार्यों में न लगकर ध्वंसात्मक कार्यों में ही रूचि रखते हैं । 3. आर्यों और दस्युओं को जानकर तू शासन करता हुआ यज्ञशील पुरुषों के लिए कुत्सित कर्मों में लगे हुए पुरुषों को विनष्ट कर। तेरे राष्ट्र में अव्रती पुरुषों की अधिकता न हो जाये। यज्ञशील पुरूष ही राष्ट्र में फूलेंगे–फलेंगे तभी तो राष्ट्र का उत्थान होगा । 4. हे राजन् ! तू राष्ट्र के शासन के लिए शक्तिशाली बन । निर्मल राजा के राज्य में तो 'मात्स्यन्याय' ही प्रवृत्त होता है। हे राजन् ! तू शक्तिशाली बनकर शासन करता हुआ यज्ञशील पुरुषों का प्रेरक बन, उन्हें उत्साहित करने वाला हो । 5. (सह माद्यन्ति अत्र) मिलकर प्रसन्नतापूर्वक स्तवनादि कार्यों को करने के स्थलों में तेरे उन 'दस्यु–रन्धन' तथा 'यजमान–सर्धन' आदि सभी कार्यों को दीप्त करते हैं, अर्थात् उन कार्यों का शासन करते हैं। सज्जनों की रक्षा व दस्युओं के दूरीकरण से ही राजा प्रशंसित होता है। एक शब्द में राजा का कार्य प्रजा–पालन ही तो है। इस प्रजा–पालन के लिए उसे राष्ट्र के भीतर के दस्युओं को दण्ड देना होता है और प्रजा–पालन के लिए ही राष्ट्र के बाह्य शत्रुओं से युद्ध आवश्यक हो जाता है। सब दण्ड व युद्ध प्रजा–पालन के उद्देश्य से ही होते हैं। इस कर्त्तव्य को शक्तिशाली शासक ही निभा सकता है।

साभार – ऑनलॉइनवेद डॉट कॉम

यज्ञ मीमांसा भाग–6 गतांक से आगे .....

पंचमहायज्ञ एवं प्रकार

गृहस्थाश्रम में रहते हुए गृहपति दैनिक पंचमहायज्ञों के सम्पादन को अपना परम कर्त्तव्य समझता है । विश्व में भारतीय संस्कृति के वैशिष्ट्य का आधार यही पंच महायज्ञ विधि है। इन यज्ञों से ही सम्पूर्ण चराचर जगत् का सर्वाधिक कल्याण सम्भव है। वैदिक संस्कृति की अनुपम देन 'यज्ञ' की शिक्षा ब्रह्मचर्य काल से ही दी जाती थी।

उपनीय गुरूः शिष्यं शिक्षयेच्छौचमादितः ।
आचारमग्निकार्यं च सन्ध्योपासनमेव च ।। (मनु. 2.66)

ब्रह्मचारी ब्रह्मयज्ञ तथा देवयज्ञ करता है, संन्यासी केवल ब्रह्मयज्ञ किन्तु गृहस्थ तथा वानप्रस्थ को पंचमहायज्ञ करने चाहिए जिनके नाम हैं– **ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, बलिवैश्वदेवयज्ञ, तथा अतिथियज्ञ**(सत्यार्थ प्रकाश समु. 4)। मनुस्मृतिकार ने इन्हें ऋषियज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, भूतयज्ञ तथा नृयज्ञ कहा है–

ऋषियज्ञं देवयज्ञं भूतयज्ञं च सर्वदा ।
नृयज्ञं पितृयज्ञं च यथाशक्ति न हापयेत् ।। मनु. 4.16

डॉ. सुधीर शर्मा – क्रमशः.....

सम्पादकीय
युवा भारत का अभिमान आर्यवीरदल

श्रेष्ठ संकल्प एवं आदर्श चरित्र के धनी आर्यवीर आर्य समाज ही नही प्रत्युत विश्व के किसी भी संगठन से संयुक्त होने पर उत्तम परिणामों के प्रदाता सिद्ध हुए हैं। यह इसके गौरवपूर्ण इतिहास के पन्नों पर स्वर्णाक्षरों से अंकित है। आर्यवीर दल विश्व का एक मात्र ऐसा अनुपम युवा संगठन है जिसकी प्रासंगिकता सार्वदेशिक एवं सार्वकालिक है। संस्कृति रक्षा, शक्ति संचय एवं सेवा कार्य इस संगठन के प्रमुख ध्येय हैं। चरित्रवान् युवा ही राष्ट्र की सर्वविध रक्षा कर सकते हैं। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जहाँ पाश्चात्य विकृत संस्कृति के प्रभाव से युवा पीढी में उच्छृंखलता बढती जा रही है, जीवन मूल्यों का निरन्तर पतन होता जा रहा है ऐसे मे बड़ी–बड़ी डिग्रियॉ, बड़े पदों पर सरकारी सेवा अथवा अन्य सेवाओं में भागीदारी, व्यवसाय, उद्यमिता आदि समस्त पुरुषार्थों पर प्रश्न चिह्न लग रहे हैं, इन समस्त के मूल में अनैतिक आचरण कारणभूत है। ऐसे में आर्यवीर दल जैसे युवा संगठनों की प्रासंगिकता और बढ जाती है जो युवाओं के चरित्र निर्माण में अहर्निश लगा हुआ है।

आज भारत देश को विश्व का सबसे युवा राष्ट्र कहा जाता है क्योंकि यहा 65 प्रतिशत आबादी की आयु 40 वर्ष से कम है अर्थात् विश्व के सर्वाधिक युवा भारत देश के नागरिक हैं, जो देश की सबसे बडी पूंजी है, श्रेष्ठ मानव संसाधन ही किसी भी राष्ट्र की उन्नति का आधार होता है, नागरिकों को सुयोग्य, चरित्रवान्, स्वस्थ एवं बौद्धिक स्तर पर विकसित करने की अहम भूमिका का निर्वहन आर्यसमाज के युवा संगठन आर्यवीर दल द्वारा किया जा रहा है। यही कारण है कि आज आर्यवीर दल युवा भारत का गौरव ही नहीं अपितु अभिमान भी है।

आर्य जगत् को ऐसे संगठनों का अत्यधिक लाभ लेना चाहिए। आर्यवीरों के सहयोग एवं प्रतिनिधित्व से ही 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' रूपी महर्षि दयानन्द का स्वप्न साकार हो सकता है। आर्यवीरों का दृढ विश्वास है–

"कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः" ।

अर्थात् मेरे सीधे हाथ में पुरुषार्थ है और विजय मेरे बायें हाथ में है। इस प्रकार के संकल्प एवं राष्ट्र निर्माण जैसे पुनीत कार्यों में संलग्न युवाओं को हमें सर्वदा प्रोत्साहित करना चाहिए।

डॉ. सुधीर शर्मा

एक राष्ट्र गौरवशाली तब होगा जबकि वह अपने जीवन मूल्यों व परम्पराओं का निर्वाह करने में सफल व सक्षम होगा । – आचार्य चाणक्य

thearyasamaj.org

सार्वदेशिक आर्य वीर दल , आर्य समाज का एक सुयोग्य पुत्र

मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई जब मुझे यह ज्ञात हुआ कि सार्वदेशिक आर्य वीर दल के एक अत्यन्त सुयोग्य, विद्वान्, कर्मठ, सिद्धान्तवादी, तेजस्वी सदस्य डॉ सुधीर शर्मा के कन्धों पर आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के विस्तार की महती जिम्मेदारी सौंपी गयी है। यह प्रसन्नता इसलिए अधिक है क्योंकि इससे एक माँ के लिए योग्य संतान की आवश्यकता का अनुभव होता है ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज रूपी माता के सुयोग्य पुत्र 1929 को महात्मा नारायण स्वामी के नेतृत्व में स्थापित युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य वीर दल अपना दायित्व आज भी पूरी निष्ठा के साथ निभाने का प्रयास कर रहा है। संस्था की दृष्टि से विचार करें तो वह संस्था मृत हो जाती है जिसमें निरन्तर नवीन रक्त का संचार ना हो। आर्य समाज उस दृष्टि से शून्य ना हो इसलिए इस दिशा में सार्वदेशिक आर्य वीर दल बच्चों व युवाओं को अपनी संस्कृति, सभ्यता, ज्ञान–विज्ञान–संस्कार आदि का अपने शिविरों, गोष्ठियों, कार्यशालाओं, शाखाओं के माध्यम से निरन्तर प्रशिक्षण देता आ रहा है। इस समय दिल्ली, राजस्थान, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, आन्ध्रप्रदेश, छत्तीसगढ़, उड़ीसा, गुजरात, मुम्बई, पंजाब, बंगाल, झारखण्ड, कर्नाटक, बिहार आदि राज्यों में प्रतिवर्ष 50 से अधिक आवासीय एवं गैर आवासीय प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया जाता है , जिनमें प्रशिक्षित आर्य वीर योग, स्वास्थ्य, सरकारी सेवा, शिक्षा आदि के क्षेत्र में सोशल मीडिया, सीधा सम्पर्क, आर्य समाजों, आर्य संस्थाओं, पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से वैदिक धर्म का तीव्रतम प्रचार – प्रसार हेतु प्राण–पण से जुटे हुए हैं। राजस्थान में यह कार्य श्री सत्यवीर जी आर्य के निर्देशन में बड़ी कुशलता से चल रहा है। अभी दिसम्बर में श्रीगंगानगर एवं बीकानेर जिलों में आवासीय प्रशिक्षण शिविरों का समापन हुआ है जिनमें सैंकड़ों युवाओं ने इस कड़ड़ाती सर्दी में अपनी दृढ़ता का परिचय दिया । इस कार्य को आगे बढ़ाने में सभी का सहयोग अत्यन्त आवश्यक है । अतः मेरा राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा से निवेदन है कि समस्त आर्य समाजों में एक आर्य वीर दल अधिष्ठाता नियुक्त करवाये और प्रान्तीय संचालक से सम्पर्क कर आर्य समाजो में शाखा अथवा शिविरों के आयोजन को बढ़ावा देंवे जिससे कि समाजों में निरन्तर नवीन रक्त का संचार हो सके ।

– **स्वामी देवव्रत सरस्वती,** प्रधान संचालक,
सार्वदेशिक आर्य वीर एवं वीरांगना दल

विद्यार्थियों के लिए मार्गदर्शन

वर्तमान में सर्वत्र परीक्षाएँ चल रही है ऐसे में प्रत्येक विद्यार्थी अपनी परीक्षाओं को सफल बनाने की हर सम्भव तैयारी में जुटा हुआ है । और हो भी क्यों ना। यही समय तो है जबकि व्यक्ति अपने भविष्य का निर्धारण करता है। ऐसे समय में विद्यार्थी का स्वस्थ व एकाग्र होना तो अत्यन्त आवश्यक है ही, साथ ही सुनियोजित प्रकार से अपनी तैयारी करना भी इसमें सफलता प्राप्त करने का अनिवार्य अंग है। इसी महत्त्वपूर्ण तथ्य को विचार करते हुए अपने अनुभव व अध्ययन के आधार पर कुछ चयनित सामग्री इस लेख में प्रस्तुत कर रहा हूँ ।

जो कि अग्र प्रकार से है :

उत्तम स्वास्थ्य एवं तीव्र बुद्धि की प्राप्ति के लिए :

• सर्वप्रथम अपनी एक दिनचर्या व्यवस्थित करें । लक्ष्य निर्धारित करें। रात्रि में 10–11 बजे सोना और प्रातः 4–5 बजे उठना। कम–से–कम 6–7 घण्टे की नींद अवश्य लें। प्रातः काल 1–2 घण्टे पढ़ने का नियम बनायें।

• अध्ययन के पश्चात् लगभग आधा घण्टा आसन, प्राणायाम व हल्के व्यायाम का अभ्यास करें । पश्चात् स्नानादि करके भृकुटी में ध्यान लगाकर गायत्री मन्त्र का कुछ समय तक जाप करें।

• विद्यालय से आने के पश्चात् हल्का आहार व थोड़ा मनोरंजन अवश्य करें ।

• सायंकाल भोजन के पश्चात् मनोरंजन एवं परिवार के साथ बैठकर वार्तालाप आदि करें।

• प्रतिदिन सायंकाल खेलने अथवा भ्रमण के लिए कुछ समय अवश्य रखें। पढ़े हुए विषय की परस्पर चर्चा करना, अपने अध्यापकों से विचार–विमर्श करना और विषय से सम्बन्धित अन्य सन्दर्भ ग्रन्थों का भी अध्ययन करना चाहिए ।

• ब्रह्मचर्य ,अहिंसा आदि व्रतों का पालन करें तथा अतिसाहस वाले कार्यों का परित्याग करें।

• ईश्वर पर अटल विश्वास, ध्यान का नियमित अभ्यास, तथा अति–आत्मविश्वास, निराशावाद एवं नकारात्मक विचारों से दूर रहें। और सदा सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाऐं ।

• नियमित रूप से भीगी हुई बादाम व काली मिर्च का दूध के साथ सेवन करें।

• श्वास को बाहर निकालकर रोकना और फिर धीरे–धीरे वापस लेना । इस प्रकार प्राणायाम नियमित रूप से करना चाहिए।

• इन उपर्युक्त अभ्यास को करने से जहाँ विद्यार्थी शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ होगा वहीं तीव्र बुद्धि व एकाग्रता की भी प्राप्ति होगी ।

thearyasamaj.org

परीक्षा की तैयारी कैसे करें ?

- पुराने प्रश्न पत्रों के आधार पर महत्त्वपूर्ण प्रश्नों को चयन कर उनकी तैयारी करें।
- चित्र, मानचित्र आदि विषय को समझने में उपयोगी होते हैं। पढ़ते समय कम्प्यूटर या इन्टरनेट की सहायता ले सकते है।
- निरन्तर 1–2 घण्टे पढ़ने के पश्चात् कुछ टहलना, पानी पीना या थोड़ा संगीत सुनना तनाव को दूर करने में सहायक हैं।
- किसी कठिन अथवा लम्बे विषय को छोटे–छोटे टुकड़ों में बॉट ले, । इससे विषय को समझने में आसानी होगी ।
- यदि किसी विषय को समझने में कठिनाई आ रही हो तो निःसंकोच उस विषय के विशेषज्ञ से मार्गदर्शन प्राप्त करें।
- जो विषय पढ़े हैं, उनके संक्षेप में नोट्स बनाते चले जाएं ।
- भोजन संतुलित लें। गरिष्ठ और अधिक भोजन आलस्य को बढ़ाता है तथा कम भोजन से सिरदर्द आदि की समस्या होने लगती है।
- परीक्षा की तैयारी करते समय कोई कठिनाई आये तो गुरुजन अथवा माता – पिता से परामर्श अवश्य लें।
- सबसे महत्वपूर्ण बात ये है कि मोबाईल एवं अन्य इलेक्ट्रॉनिक आईटम का कम से कम प्रयोग करें । ये सभी स्वास्थ्य एवं बुद्धि के शत्रु होते हैं।

परीक्षा के समय ध्यान देने योग्य बातें

- मन से परीक्षा का भय निकाल कर आत्मविश्वास से प्रश्नों को ध्यान से पढ़कर अंकों के अनुसार प्रश्नों का उत्तर दें।
- जिस विषय की परीक्षा है उसका पाठ्यक्रम एक दिन पहले ही पूरा दोहरा लें। परीक्षा के दिन रात्रि में अधिक समय तक जागने से परीक्षा के समय स्मरण किया हुआ भूल जाता है। विषय से सम्बन्धित मुख्य बिन्दुओं को ध्यान में रखना और उन्हें समझ लेना बहुत आवश्यक है।
- परीक्षा के दिन भी कुछ समय तक हल्का व्यायाम, आसन, प्राणायाम और अल्पआहार लेकर जायें।
- परीक्षा के पूर्व और परीक्षा स्थल पर तनाव से बचना चाहिए। ऐसी स्थिति आने पर दीर्घ श्वास–प्रश्वास लेना एवं पूर्ण आत्मविश्वास रखना चाहिए और जो प्रश्न सरल हो उसका उत्तर प्रथम लिखने से विचारों की श्रृंखला बन जायेगी और शेष प्रश्न भी समझ में आते चले जायेंगे।
- प्रश्नपत्र को ध्यान से पढ़ना, प्रश्नों का उत्तर सुलेख और सटीक देना परीक्षक को प्रभावित करता है।
- एक ही प्रश्न का उत्तर देने में अधिक समय न लगाये।
- यदि किसी प्रश्न के उत्तर देने में कुछ कठिनाई है तो उसके लिए कुछ लाईन छोड़कर शेष प्रश्नों का उत्तर लिखने में ध्यान दें।
- प्रश्नों के उत्तर में शीर्षक या उपशीर्षक को साफ अक्षरों में लिखें।
- जहां तक हो सके बिना उत्तर दिए किसी भी प्रश्न को नहीं छोड़ना चाहिए। परन्तु इसका अभिप्राय यह नही है कि अनावश्यक बातों से उत्तर–पुस्तिका को भरा जाये। उत्तर–पुस्तिका में अनावश्यक बातें न लिखें।
- जब आपके प्रश्नों के उत्तर पूरे हो जाये तो एक बार उन्हें पुनः देख लें और कहीं कोई अशुद्धि या अन्य त्रुटि रह गयी हो तो उसे ठीक कर लें। इन उपर्युक्त बातों का जो विद्यार्थी सही अर्थों में क्रियात्मक रूप में अभ्यास करेगा, वह निश्चित रूप से सफलता और उन्नति प्राप्त करेगा ।

– **सत्यवीर आर्य**, प्रान्तीय संचालक,
सार्वदशिक आर्य वीर दल, राजस्थान प्रान्त

आर्य वीर दल

परिचय एवं स्थापना – 20 वीं सदी के आरम्भ में जब भारतवर्ष चारों तरफ अन्याय, अत्याचार, सामाजिक कुरीतियों से जकड़ा हुआ था और ऐसी जंजीरों को तोड़कर भारत को पूर्ण स्वतन्त्रता दिलाने की दिशा में आर्य समाज के आक्रामक तेवर से आततायियों का दिन का चैन और रात की नींद गायब थी । ऐसी स्थिति में आततायियों द्वारा आर्य समाजी नेताओं, क्रान्तिकारियों यथा– स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय, पं. लेखराम, महाशय राजपाल आदि की हत्या करने का सिलसिला तेज होता जा रहा था । तत्कालीन विषम परिस्थितियों से निपटने व युवाओं को आजादी के संग्राम के लिए प्राण–प्रण से प्रशिक्षित करने के निमित्त सन् 1927 ई. में महात्मा हंसराज की अध्यक्षता में दिल्ली में एक विराट् महासम्मेलन हुआ, जिसके परिणामस्वरूप 26 जनवरी, 1929 को आर्य – रक्षा– समिति के सुदृढ़ अंग के रूप में आर्य वीर दल की स्थापना की गयी । समिति – अध्यक्ष महात्मा नारायण स्वामी ने 10000 आर्य वीर और 50000 रूपये एक वर्ष में एकत्रित करने की प्रतिज्ञा की, जिसे उन्होंने अपने अदम्य साहस, अथक परिश्रम के बल पर कुछ ही महीनों में पूर्ण कर ली और इस तरह आर्य वीर दल की सशक्त नींव पड़ी ।

विस्तार – सन् 1931 में महात्मा नारायण स्वामी की अध्यक्षता में दूसरे आर्य महासम्मेलन का आयोजन हुआ , जिसमें आर्य वीर दल की शाखा प्रत्येक प्रान्त, नगर और आर्य समाज में स्थापित करने का आदेश दिया गया और आर्य वीर दल के नियमित संचालन के लिए बलिष्ठ आर्य वीरों को अन्य स्थानों पर प्रशिक्षण के लिए भेजा गया । इस प्रकार सिंहों की

आर्य समाज के कार्यों का सर्वोत्तम परिणाम गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना है। वह सच्चे अर्थों में राष्ट्रीय संस्था है, जिसका शासन और प्रबन्ध स्वायत्त है। – महात्मा गांधी

thearyasamaj.org

संगठित दहाड़ सुनकर आर्यों पर होने वाले आक्रमण रुक गये । अब हिन्दुओं के उत्सव, मेले, आयोजन निर्विघ्न सम्पन्न होने लगे । समय बीतने के साथ आर्य वीर दल के तेजी से बढ़ते प्रभाव के कारण विधर्मियों के साथ–साथ हिन्दुओं के भी सामाजिक संगठनों की कुदृष्टि इस पर पड़ने लगी । जिसके कारण सामूहिक उत्सवों, आयोजनों तक में उनका असहयोग बढ़ने लगा । इस तरह की स्थिति से सुदृढ़तापूर्वक, कुशलतापूर्वक निपटने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने आर्य वीर दल का समस्त नेतृत्व उत्साही नवयुवक श्री ओमप्रकाश जी त्यागी को दिया तथा 1936 ई. में आर्य वीर दल के नियमों में संशोधन कर उन्हें विधिवत् स्वीकृत किया । धुन के धनी अदम्य साहसी नवयुवक का नेतृत्व पाकर संगठन रूपी रथ दिन–दूनी और रात–चौगुनी प्रगति के पथ पर अग्रसर होने लगा । 1942 ई. में 400 आर्य वीरों का प्रथम शिविर बदरपुर (दिल्ली) में लगा, जिसमें सारे देश से चुने हुए आर्य वीरों को एक मास तक सघन प्रशिक्षण दिया गया ।

कार्य –

* 'करो या मरो' आन्दोलन में सक्रिय भूमिका ;
* 'हैदराबाद निजाम सत्याग्रह–हैदराबाद विलय आन्दोलन' का नेतृत्व व सर्वस्व आहुति ।
* 'पंजाब हिन्दी आन्दोलन' में उल्लेखनीय योगदान ।
* '' मौपला उपद्रव '' में अपनी जान पर खेलकर हिन्दुओं की रक्षा और दंगा पीड़ितों की सेवा ।
* स्वतन्त्रता के समय पश्चिमी पंजाब में हजारा, रावलपिण्डी, नौशेरा व अन्य स्थानों पर मुस्लिम बहुल इलाकों में हिन्दुओं की रक्षा व मॉ, बहन–बेटियों की आन–बान की सुरक्षा ।
* हिन्दुओं के सभी मेलों यथा – गढ़मुक्तेश्वर, यमुना घाट के उत्सवों व मेलों के अवसर पर जनता की सेवा, सहायता और सुरक्षा ।
* पूर्वी बंगाल (वर्तमान बांग्लादेश) के नौआखली में 1946 के आस–पास हिन्दुओं के निर्मम संहार को रोकना ।
* विभिन्न शरणार्थी शिविरों के माध्यम से विभाजन के समय भारत में आये शरणार्थियों की रक्षा, सेवा व सहायता करना ।
* पूर्वी बंगाल के सीमा पर स्थित जयनगर के समीप मुस्लिम गुण्डों से हुए गोलीबारी युद्ध में विजयश्री का प्रतीक उस समय छीना गया पाकिस्तानी झंडा अब भी आर्य वीर दल कार्यालय में आर्य वीरों के शौर्य की याद दिला रहा है ।
* 1936 में मध्य भारत में पड़े भयानक दुर्भिक्ष, 1942–43 में बंगाल का 45 लाख लोगों को लील लेने वाला भयानक अकाल, 1950 में असम की बाढ़, केकड़ी ;राज.द्ध व मौरवी (गुजरात) के जलप्लावन में आर्य वीरों ने प्राण–प्रण से जनता की सेवा की ।

इस तरह तत्कालीन पूर्व से लेकर पश्चिम तक , उत्तर से लेकर दक्षिण तक सम्पूर्ण भारत आर्य वीर दल के शौर्य, सेवा और मानवता के किस्से सुना रहा है । बिना आर्य वीर दल के भारत का इतिहास सम्पूर्ण होना असम्भव है । 26 जनवरी 1929 से लेकर आज तक आर्य वीर दल मानव मात्र और सत्य की रक्षा व प्रसार के लिए प्राण–प्रण से कार्य करते हुए अपनी स्थापना के तीनों उद्देश्यों यथा –

1. संस्कृति रक्षा, 2. शक्ति–संचय, 3.सेवा कार्य को निरन्तर अंजाम देते हुए आज तक कायम है । आज भी वह निरन्तर अनेकों शिविरों, शाखाओं, कार्यशालाओं आदि के माध्यम से बच्चों व युवाओं को संस्कृति की शिक्षा देने और बाढ़, भूकम्प आदि प्राकृतिक आपदाओं के समय बढ–चढ़ कर सेवा कार्य में लगा रहता है। फिर चाहे वह उत्तराखण्ड की तबाही हो अथवा जम्मू–कश्मीर की जलप्लाविनी हो । लेकिन विडम्बना है कि कुछ पूर्वाग्रहों के कारण आर्य वीर दल और इसकी मातृ संस्था आर्य समाज को इतिहास के पन्नों में नाममात्र का स्थान ही उपलब्ध हो सका, जिसके कारण बहुसंख्य लोगों तक आर्य समाज का राष्ट्र–निर्माण में योगदान का सम्पूर्ण वृत्तचित्र पहुंचना अभी शेष है ।

– आचार्य देवेन्द्र शास्त्री, कार्यकारी संचालक, राजस्थान प्रान्त

युवाओं के नाम सन्देश

* जिनके पास समाज को सही दिशा देने का गुरूतर दायित्व है यथा सन्त, सामाजिक कार्यकर्ता, पण्डित, पुजारी, मौलवी, पादरी, धर्मगुरू आदि, वे ही समाज को दिशाहीन करके अपने–अपने मतों के प्रचार में रत रहते हुए स्वार्थ सिद्धि में लगे हुए हैं । यही कारण है कि आज की युवा पीढ़ी सही मार्गदर्शन के अभाव में दिशाहीन होकर या तो नास्तिक होती जा रही है या फिर पाखण्डों और आडम्बरों के भंवर में फंसती जा रही है। परिणामस्वरूप समस्त हिन्दू समाज, भारतीय समाज अनेक मत–पन्थों में विभक्त हो गया है। हर कोई अपने को श्रेष्ठ कहता और प्रचार करता है। इसी फूट का लाभ विदेशी और विधर्मी उठाकर अपने मत–मतान्तरों की प्रगति में लगे हुए हैं और तमाम तरह के राजनीतिक, धार्मिक, नैतिक षड़यन्त्र हमारे देश में रचे जा रहे हैं और नौजवान अपना अमूल्य समय विनाशकारी अथवा विभाजनकारी कार्यों में निरन्तर लगाये हुए हैं। इन सभी प्रकार के षड़यन्त्रों के विरुद्ध युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भयंकर युद्ध आरम्भ किया जो आज आर्य समाज के नाम से जाना जाता है।उन्होने वेदों के, ऋषियों के बताये मार्ग पर चलने का आदेश दिया और **"वेदों की ओर लौटो"** का नारा दिया । इसलिए युवाओं को मैं यह कहना चाहता हूँ कि यदि पाखण्ड, व्यभिचार, अनाचार, विधर्मियों से अपने आपको बचाना चाहते हो, जीवन का सही मार्गदर्शन चाहते हो, राष्ट्रीय एकता चाहते हो तो आर्य समाज के युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य वीर दल से जुड़िए, वेदों की ओर लौटिए, सत्यार्थ प्रकाश पढ़िये । –

–श्री मदनमोहन जी आर्य, आर्य समाज प्रचारक एवं संरक्षक, सार्वदेशिक आर्य वीर दल, राजस्थान प्रान्त

जो निरपराध, निरीह जीवों का आत्मसुख के लिए वध करता है, वह न तो इस जीवन में सुख पाता है और न ही मरने के बाद । – महर्षि मनु

thearyasamaj.org

❊ पाश्चात्य जगत की चकाचौंध, टी.वी. द्वारा सिखाया जा रहा मर्यादाहीन आचरण और भोग के आनन्द, शिक्षा की विकृतियां और राजनैतिक कलुषिता के कारण आज हमारा युवा बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकू, मद्य, आदि का सेवन करना और मर्यादाहीन सामाजिक व्यवहार को फैशन एवं जीवन का सच्चा आनन्द समझ बैठा है । परिणामस्वरूप समाज और राष्ट्र अपना तेज खोकर रोगों से ग्रस्त, बीमार नजर आते हैं। चारों तरफ दुःख और अशान्ति ही नजर आती है। इसलिए मैं युवाओं से कहना चाहूँगा कि योग करें, भोगों से दूर रहें और जीवन का सच्चा तथा स्थायी आनन्द प्राप्त करें ।

– भवदेव शास्त्री, प्रान्तीय महामंत्री,
सार्वदेशिक आर्य वीर दल, राजस्थान प्रान्त

सार्वदेशिक आर्य वीर दल द्वारा संस्कार निर्माण का कार्य एवं सेवा का कार्य जोरों पर

आर्य समाज के युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य वीर दल की राजस्थान प्रान्तीय इकाई द्वारा आवासीय एवं गैर–आवासीय प्रशिक्षण शिविरों, शाखाओं, प्रतियोगिताओं, यज्ञों, गोष्ठियों, सेमिनारों, परिचर्चाओं, नाटकों आदि के माध्यम से बालकों व युवाओं का निरन्तर चरित्र निर्माण किया जा रहा है, उन्हें संस्कृति, धर्म, अध्यात्म के साथ–साथ आधुनिक व्यवहार की शिक्षा भी दी जा रही है। अपने इन कार्यों के विकास के लिए अब आर्य समाजों का भी सहयोग मिलता जा रहा है। जिसके परिणामस्वरूप आर्य वीर दल का कार्य पहले जहां प्रान्त के 4–5 जिलों तक ही सीमित हुआ करता था वही आज 20–25 जिलों में हो रहा है।

पिछले कुछ वर्षों में संगठन की प्रान्तीय इकाई द्वारा राजस्थान के प्रत्येक भाग में 10 से अधिक प्रान्तीय एवं 50 से अधिक स्थानीय आवासीय प्रशिक्षण शिविरों का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया, जिनमें हजारों युवाओं ने योग, व्यायाम, यज्ञ, धर्म, संस्कृति, मार्शल आर्ट, चरित्र, अनुशासन आदि का प्रशिक्षण प्राप्त किया। अभी पिछले दिनों शीतकाल में प्रान्तीय व संभागीय शिविरों में कुल लगभग 300 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। प्रान्तीय शिविर आर्य समाज , सुमेरपुर पाली के संयोजन से 24 से 31 दिसम्बर, 2014 तक श्री चेतन विद्या मन्दिर उ.मा. विद्यालय , सुमेरपुर में आयोजित किया गया । जिसमें भीलवाड़ा, अजमेर, सवाई माधोपुर, उदयपुर, भरतपुर, जैसलमेर, जयपुर, बाड़मेर, पाली, सिरोही, बाँसवाड़ा, चित्तौड़गढ़, अलवर, चुरू, जालौर, झालावाड़, जोधपुर आदि जिलों के साथ–साथ छत्तीसगढ़ व महाराष्ट्र से भी प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस शिविर में 10 आर्यवीरों ने व्यायाम शिक्षक का व 3 ने उपव्यायाम शिक्षक श्रेणी का विशेष प्रशिक्षण प्राप्त किया। सभी प्रतिभागियों को 7 दिनों तक "आर्यवीर श्रेणी एवं "शाखानायक श्रेणी" का सघन प्रशिक्षण दिया। पश्चात् 7 प्रतिभागियों को शाखानायक की एवं शेष सभी को "आर्यवीर" की उपाधि से विभूषित किया गया।

शिविर के समापन की पूर्व संध्या पर सुमेरपुर के मुख्य मार्गों से एक भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया गया जिसमें आर्यवीरों द्वारा तलवार, लाठी, नि–युद्धम्, आदि का प्रदर्शन आकर्षण का केन्द्र रहा । इसमें कन्या गुरूकुल, शिवगंज की कन्याओं ने भी भाग लिया। अन्त में 31.12.2014 को प्रातः 10 बजे से 1 बजे तक प्रधान संचालक स्वामी देवव्रत जी सरस्वती की अध्यक्षता में भव्य समापन समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें प्रथम प्रान्तीय संचालक द्वारा शिविर का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया। पश्चात् आर्य वीरों ने संगीत की मधुर धुनों पर संचलन, सर्वांगसुन्दर व्यायाम, सूर्य नमस्कार, भूमिनमस्कार, नि–युद्धम्, लाठी, तलवार, योगासन, मल्लखम्ब आदि का प्रदर्शन किया। अन्त में पुरस्कार वितरण, ध्वजावतरण के पश्चात् आगामी शीतकालीन शिविर हेतु ध्वज श्री रामनारायण शास्त्री जोधपुर को व ग्रीष्मकालीन शिविर के लिए अजमेर संभाग संचालक श्री यतीन्द्र शास्त्री को प्रदान किया गया । शिविर समाप्ति की घोषणा के साथ शिविर का समापन हुआ ।

सम्पूर्ण शिविर में प्रधान संचालक स्वामी देवव्रत सरस्वती की सान्निध्य प्राप्त हुआ ।

–भवदेव शास्त्री, प्रान्तीय महामंत्री

विविध कार्यक्रमों की झलकियाँ

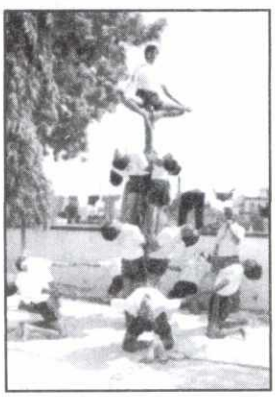

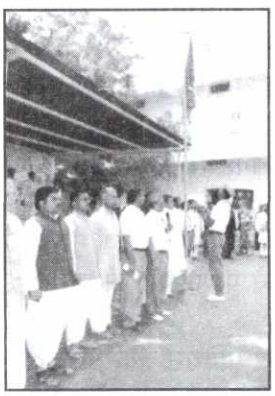

राजा राज्य की जड़ होता है और जब वह जड़ ही दोषग्रस्त हो तो राज्य कभी भी दोषमुक्त अर्थात् अपराधमुक्त नहीं हो सकता । – आचार्य चाणक्य

thearyasamaj.org

आर्य जगत की अपूर्णनीय क्षति

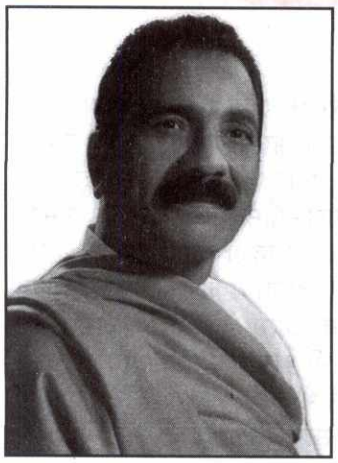

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के पूर्व महामंत्री एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान ब्र. राज सिंह जी आर्य को 5 जनवरी 2015 को दोपहर 12:30 बजे राममनोहर लोहिया अस्पताल में 61 वर्ष की आयु में ह्रदयगति रूक जाने से आकस्मिक देहवसान हों गया। आप आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान, प्रवक्ता व कर्मठ आर्यनेता थे। यह आपकी योग्यता एवं समाज के प्रति समर्पण ही था कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद 12 वर्षों तक सुशोभित रहे। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलनों की वर्तमान श्रृंखला के जनक एंव संयोजक, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा पदाधिकारी, सार्वदेशिक आर्य वीर दल के महामंत्री आर्य विद्या सभा गुरूकुल कांगड़ी के उपप्रधान पदों को भी कुशलता एवं पूर्ण निष्ठा के साथ निभाया। अनेक युवाओं के आप प्रेरणास्त्रोत रहे हैं। ऐसे निष्ठावान् कर्मठ, विद्वान को खौकर आर्य जगत की निश्चय ही अपूरणीय क्षति हुई है। हम ईश्वर से उनकी आत्मा को शांति प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के पूर्व प्रधान आदरणीय विद्यासागर जी शास्त्री का दिनांक 16 जनवरी 2015 को 101 वर्ष आयु में देहावसान हो गया। शास्त्री जी आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् एवं कुशल प्रशासक रहे हैं। शास्त्री जी के निधन के आर्य जगत् मुं शोक की लहर है। आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान दिवंगत आत्मा के लिए शान्ति एवं शोक सन्तप्त परिवार के लिए शान्ति, शक्ति एवं सामर्थ्य प्रदान करने हेतु ईश्वर से प्रार्थना करती हैं ।

– मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा

सभा द्वारा महर्षि दयानंद जन्मोत्सव का आयोजन

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान द्वारा युग प्रवर्तक महर्षि दयानंद 15 फरवरी, 2015 रविवार को प्रातः 8.30 बजे से प्रसिद्ध विद्वान डॉ. रामपाल विद्याभास्कर के ब्रह्मत्व में यज्ञ, भजन एवं सत्संग का ''सभा भवन'' राजा पार्क, जयपुर में आयोजित किया जायेगा। कार्यक्रम के पश्चात् प्रतिनिधि सभा की कार्यकारिणी अधिवेशन भी रखा गया है।

– मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा

आर्य समाज के चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज किशनपोल बाजार, जयपुर के वार्षिक चुनाव सम्पन्न हुए । उक्त चुनावों में ओम प्रकाश वर्मा (प्रधान), पुरूषोत्तम दास (वरिष्ठ उपप्रधान), श्री शंकरलाल शर्मा (उपप्रधान), कमलेश शर्मा (मंत्री), दिनेश शर्मा (कोषाध्यक्ष), एवं शेलेश शाह, गोपाल सिंह,गिरिराज शर्मा, डॉ. मदनमोहन जावलिया, श्रीमती सरोज वर्मा, कौशलाधीश मिश्रा, श्रीमती सरला चॉदना, वर्षा शर्मा, रमेश शर्मा, बी.एल. बुनकर आदि को विभिन्न उत्तरदायित्वों के लिए निर्वाचित किया गया ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती एक्युप्रेशर सेवा केन्द्र का शुभारम्भ

आर्य समाज मन्दिर, महर्षि पाणिनि नगर पुंजला जोधपुर मे दि. 30 नवम्बर, 2014 को जनसेवा हेतु महर्षि दयानन्द सरस्वती एक्युप्रेशर सेवा केन्द्र का शुभारम्भ किया गया। आर्य समाज के प्रधान श्री गजेन्द्रसिंह सांखला एवं उनके भ्राता श्री महेन्द्र सिंह सांखला द्वारा अपने माता–पिता स्व. श्रीमति मथुरादेवी एवं स्व. श्री मांगीलाल जी सांखला (भामाशाह रत्न से सम्मानित) की स्मृति में एक्युप्रेशर के समस्त आधुनिक उपकरण उपलब्ध कराये गये। प्रतिदिन सांय 4 बजे से 6 बजे तक विशेषज्ञों की देखरेख में विभिन्न रोगों का इलाज होगा। उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि श्री नरेन्द्रजी, किशोर सिंह जी टांक, पार्षद, वार्ड 62, राजेन्द्र सिंह जी, पार्षद, वार्ड 63, किशोर जी गहलोत, मेगारामजी (समाज सेवा) को माला व स्मृति चिन्ह भेंट किया गया। इस अवसर पर आर्य भजनोपदेशिका बहिन अंजली आर्या के भजनों की डी.वी.डी. का विमोचन एवं वेद गोष्ठी का आयोजन रखा गया । नई पीढ़ी को आर्य समाज से जोड़ने हेतु आर्य वीर दल की शाखा संचालन व पारिवारिक यज्ञ करवाने के प्रस्ताव पर विचार–विमर्श किया गया। मंच सचालन श्री शिवराम शास्त्री व धन्यवाद श्री करण सिंह भाटी व अमृतलालजी जसमतिया द्वारा किया गया।

–कैलाश चन्द्र आर्य

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया

23 दिसम्बर, 2014 को आर्य समाज, शाहपुरा की ओर से अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस मनाया गया। इस अवसर पर यज्ञ एवं सत्संग का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता– श्री गणपत लाल आर्य (प्रधान आर्य जिला उपप्रतिनिधि सभा, भीलवाड़ा) द्वारा की गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री जयसिंह रहे। कार्यक्रम में अनेक विद्वानों ने स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन पर प्रकाश डाला। साथ ही गर्म जर्सिया भी वितरित की गई।

–सत्यनारायण तोलम्बिया

सर्वे भवन्तु सुखिनः। सर्वे सन्तु निरामयाः । सर्व भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत् ।।
अर्थात् सभी सुखी हों, सभी निरोगी हों, सभी परस्पर कल्याण देखने वाले हों , इस संसार में कोई भी दुःखी नहीं हो।

thearyasamaj.org

डाक पंजियन सं. RJ / JPC / FN-221 / 2014-2016 / आर. एन. आई नं.10471/60

आवश्यक सूचना

- आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के अधिकार क्षेत्र में आने वाले समस्त आर्य समाजों को सूचित किया जाता है कि माननीय न्यायालयों में अवैध विवाह सम्बन्धी प्रकरण तेजी से बढ़ते जा रहे हैं ,जिससे सभा का अत्यधिक धन व समय इन्हीं मदों में व्यय हो रहा है और मूल कार्य निरन्तर बाधित हो रहा है। इसलिए सभी आर्य समाजों से निवेदन है कि विवाह करवाने के सम्बन्ध में माननीय न्यायालयों एवं सभा द्वारा समय–समय पर दिये जा रहे दिशा–निर्देशों का सख्ती से पालन कर आर्य समाज के कार्य को आगे बढ़ाने में अपना सहयोग प्रदान करें।

  मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान
- सभी उपप्रधानों, जिला प्रधानों एवं अन्य अधिकारियों, आर्य समाज सदस्यों आदि सभी से निवेदन है कि अपने क्षेत्र में होने वाली आर्य जगत् की समस्त गतिविधियों का समाचार समयानुसार "आर्य मार्तण्ड" में प्रकाशन हेतु भिजवाने का कष्ट करें । जिससे कि सभी क्षेत्रों के आर्य समाजों, संस्थाओं को पत्र में उचित स्थान प्राप्त हो सके। सबके सम्मिलित प्रयासों से ही यह पत्र परस्पर जोड़ने के इस महाभियान का सशक्त माध्यमबन सकेगा।
- जिन सदस्यों के पास नियमित रूप से "आर्य मार्तण्ड" के अंक नहीं पहुँच रहे हैं या अनियमित पहुँच रहे हैं तो इस सम्बन्ध में श्री अनिल आर्य – 9309239974 से सम्पर्क कर यथास्थिति की जानकारी प्राप्त कर अपने अंक की प्राप्ति सुनिश्चित करें।
- आर्य मार्तण्ड के समस्त सदस्यों, पाठकों से निवेदन है कि अपने सुझाव, प्रतिक्रियाएं, कार्यक्रम आदि की विज्ञप्तियां, लेख, सूचनाएँ हमें aryamartand@gmail.com एवं dr.sudhirsharma@yahoo.com पर ई–मेल करें अथवा अग्रलिखित पते पर भेजें – डॉ. सुधीर शर्मा, 42, मुक्तानन्द नगर, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर–302018

  – सम्पादक

प्रतिक्रिया

आदरणीय डॉ0 सुधीरशर्मा जी ,

सादर नमस्ते ।

आर्य मार्तण्ड दि0 5 से 21 जनवरी 15, अंक 7 प्राप्त हुआ। अंक की छपाई एवं साज–सज्जा पहले की अपेक्षा में सराहनीय लगा। आपके द्वारा सम्पादकीय लेख – प्रवाह के विरुद्ध संस्कृति के स्वर–सामयिकी एवं प्रेरणादायी है। यज्ञ–मीमांसा पर चल रहे क्रमशः लेख भी स्वाध्यायगम्य है इसे पूरे पेज में दिया जाना चाहिये । पं0 वासुदेव शास्त्री जी द्वारा दहेज का वैदिक दृष्टिकोण में मानव समाज को दिशा देने का प्रयास सराहनीय कदम है । आर्य जगत की गतिविधियों से अवगत कराया। इसे भी प्रान्त के सभी आर्य संगठनों को अपनी गतिविधियों को मार्तण्ड में भेजकर सूचित करना चाहिए, जिससे अधिक से अधिक प्रचार–प्रसार बढ़े। हमारी ओर से आप सभी को हार्दिक बधाई ।

– **गोविन्द प्रसाद आर्य**, प्रधान, आर्यसमाज, गंगापुर सिटी

आदरणीय सम्पादक जी,

आर्य मार्तण्ड का नया व सुसज्जित प्रारूप, वेद मंत्रों के भावार्थ से प्रारम्भ कर, सम्पादकीय समयानुसार राष्ट्रीय चिन्तन व विद्वता से पूर्ण है, प्रान्तीय गतिविधियों, आर्यवीर दल के समाचारों को पढकर प्रसन्नता हुई। आगे भी वैदिक चिन्तन, सामाजिक समस्याओं एवं युवाशक्ति हेतु प्रेरक प्रसंगो को भी पत्रिका में स्थान देकर और भी रोचक बनाऐंगे । आर्यवीर दल गंगापुर की ओर से हार्दिक बधाई ।

– संजय आर्य, नगर संचालक, आर्यवीर दल, गंगापुरसिटी ।

आगामी कार्यक्रम

- 15 फरवरी, 2015 रविवार को आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान द्वारा प्रातः 8.30 बजे से "महर्षि दयानन्द सरस्वती .जयन्ती" के उपलक्ष्य में यज्ञ एवं सत्संग का आयोजन किया जा रहा है।
- 15 फरवरी, 2015 रविवार को आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान की अन्तरंग सभा की बैठक 12.00 बजे से रखी गई है।
- सार्वदेशिक आर्य वीर दल, राजस्थान प्रान्त की प्रान्तीय कार्यकारिणी का अधिवेशन 22 फर.,15 को प्रातः 10 बजे से ऋषि उद्यान, अजमेर में आयोजित किया जायेगी।
- सार्वदेशिक आर्य वीर दल , जयपुर इकाई की मासिक संगोष्ठी 1 फरवरी,2015 को सायं 4–6 बजे तक आयोजित की जायेगी ।
- 8 फरवरी, 2015 रविवार को प्रातः 8.30 से 2 बजे तक आर्य समाज वैशाली नगर , जयपुर के वार्षिक उत्सव का आयोजन किया जायेगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क जयपुर के लिये राज प्रिन्टर्स एसोसियेट्स बेसमेंट, 45, परनामी मन्दिर जयपुर द्वारा मुद्रित। मु. सम्पादक एवं प्रकाशक डॉ. सुधीर शर्मा, मंत्री-आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान।

प्रेषक:-
सम्पादक, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजा पार्क, जयपुर-302004

यूको बैंकA/c No.:18830100010430 तिलक नगर, जयपुर

प्रेषित

विशेष - आर्य मार्तण्ड में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। उनमें सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।